CBSE Test Peper 03

Ch-14 बच्चे काम पर जा रहे हैं

1. **निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

   तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में?
   कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
   भयानक है लेकिन इससे भी ज़्यादा यह
   कि हैं सारी चीज़ें हस्बमामूल
   पर दुनिया की हज़ारों सड़कों से गुजरते हुए
   बच्चे, बहुत छोटे छोटे बच्चे
   काम पर जा रहे हैं।

   i. 'कितना भयानक होता अगर ऐसा होता' का आशय स्पष्ट कीजिए।
   ii. काव्यांश के आधार पर कवि की वेदना स्पष्ट कीजिए।
   iii. 'हैं सारी चीज़ें हस्बमामूल' काअर्थ स्पष्ट कीजिए। यहाँ यह किसलिए प्रयुक्त है?

2. बच्चे, बहुत छोटे बच्चे पंक्ति के आलोक में स्पष्ट कीजिए कि कवि किस बात पर जोर देना चाहता है? बच्चे काम पर जा रहे हैं कविता के आधार पर बताइए।

3. सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों हैं? 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

4. बच्चे काम पर जा रहे हैं-कविता में काले पहाड़ किसके प्रतीक हैं? ये काले पहाड़ किस तरह हानिप्रद हैं?

5. बच्चों के काम पर जाने की समस्या को कवि गाँव की पगडंडी पर न दिखाकर कोहरे में ढकी सड़क पर क्यों दिखाया है?

6. बच्चों को काम पर जाता देखकर आपके मन में जो विचार आते हैं उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

CBSE Test Peper 03

Ch-14 बच्चे काम पर जा रहे हैं

Answer

1. i. इस पंक्ति का आशय यह है कि यदि बच्चों के लिए उपलब्ध सारी सुविधाएँ वास्तव में नष्ट हो गई ,गेंदें खो जातीं, किताबें नष्ट हो जातीं, विद्यालय, पार्क, बाग, बगीचे समाप्त हो जाते तो स्थिति अधिक भयावह होती। यदि ऐसा होता तो संसार में कुछ भी नहीं बचता और संसार की सुंदरता भी नहीं बचती।
   ii. कवि की वेदना यह है कि बच्चों को काम पर जाना पड़ रहा है। वह चाहता है कि मासूम बच्चों से उनका बचपन न छीना जाए बल्कि उन्हें पढ़ा-लिखा कर योग्य और समाजोपयोगी नागरिक बनाया जाए। उनकी उम्र काम करने की नहीं बल्कि चिंतामुक्त रहकर खेलने और पढ़ने की है।
   iii. 'हैं सारी चीज़ें हस्बामूल' का अर्थ है-सभी चीज़ों का पहले जैसी स्थिति में रहना। अर्थात् उनकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आना। सभी चीज़ें यथावत हैं। यहाँ यह बच्चों के खिलौनों, पुस्तकें तथा खेल के मैदान आदि के लिए प्रयुक्त हुआ है।
2. 'बच्चे, बहुत छोटे बच्चे' के माध्यम से कवि इस बात पर ज़ोर देना चाहता है कि काम पर जाने वाले बच्चे अभी बहुत छोटे हैं। काम पर जाने की उनकी उम्र नहीं है। इतने छोटे-छोटे बच्चों को तो अभी लिखना-पढ़ना और खेलना-कूदना चाहिए। इतनी कम उम्र में काम करने से इनका बचपन और भविष्य दोनों ही नष्ट हो रहे हैं। ये बच्चों की विवशता है कि प्रतिकूल परिस्थितियों में उन्हें काम पर जाना पड़ रहा है।
3. समाज के बड़े वर्ग को आज भी गरीबी का अभिशाप झेलना पड़ रहा है। इस गरीबी और समाज की व्यवस्था के कारण करोड़ों बच्चों को अपने परिवार की आर्थिक गतिविधियों तथा जिम्मेदारियों में हाथ बटाना पड़ता है। न चाहते हुए भी वे मजदूरी करने को विवश हैं। एक समय खाने के लिए भी उन्हें सोचना पड़ता है। वे अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं कर पाते। इस अवस्था में भयानक निर्धनता को झेलते हुए उनके माता-पिता के पास गेंद, खिलौने, किताबें आदि खरीदने की क्षमता नहीं हैं, इसलिए वे सुविधा और मनोरंजन के साधनों से वंचित हैं।
4. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता में काले पहाड़ समाज में व्याप्त शोषण तथा अव्यवस्था के प्रतीक हैं। इसी व्यवस्था के कारण समाज का एक वर्ग बच्चों का शोषण करता है। वह वर्ग उनसे काम करवाकर उनका भविष्य खराब करता है। उन्हें मजदूरी भी बहुत कम दी जाती है। ऐसे लोगों के लिए अपनी जेब भरना ही उनका प्रथम कर्तव्य है।
5. गाँवों के लोग अधिक सहृदय और संवेदनशील होते हैं, जबकि शहर के लोगों में सहृदयता एवं संवेदनशीलता घटती जा रही है कवि ने बच्चों के काम पर जाने की समस्या को गाँव की पगडंडी पर न दर्शाकर कोहरे से ढकी सड़क पर दर्शाया है, क्योंकि शहर सड़कों के किनारे ही बसे हैं। शहरवासी बच्चों को काम पर जाता देखकर तनिक भी विचलित नहीं होते हैं। ऐसा लगता है जैसे उनकी संवेदना मर चुकी है।
6. बच्चों को काम पर जाता देखकर हमारे मन में यह विचार आता है कि इस उम्र में बच्चों को काम पर नहीं जाना चाहिए। उन्हें काम करने के बजाय पढ़ने लिखने और खेलने-कूदने का अवसर मिलना चाहिए। यदि उन्हें ऐसे अवसर प्रदान किये जाए तो ये मज़दूर न बनकर योग्य नागरिक बन सकेंगे और समाज व देश की प्रगति में अपना योगदान देने में सक्षम होंगे।